

## डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल  
अनुवादक - डॉ० अनिल चड्ढा

### अध्याय 8

#### ...गतांक से आगे

#### अपने आंतरिक स्वभाव को जानने के बारे में

**वृद्ध** आत्मा ने जारी रखा, "मैंने कई अवसरों पर कहा है कि आत्माएं परिस्थितियों की रचना करती हैं जो उन्हें भावनाएं उत्पन्न करने के अवसर प्रदान करती हैं। इसके परिणामस्वरूप, यह उन्हें अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में जानने का और आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का एक अवसर प्रदान करती हैं। उस सन्दर्भ में, मैंने कई विषयों पर बात की थी: आत्माएं कैसे अपने आने वाले अवतरण के लिये तैयारी करती हैं और मंच तैयार करती हैं; आत्माएं कैसे अवतरण से पहले और उसके दौरान अपने भाग्य का निर्धारण करती हैं; और कैसे, कई परिस्थितियों में, 'स्वतन्त्र-इच्छा' एक दुधारी तलवार होती है जहाँ तुम वह चुन सकते हो जो तुम नहीं हो, जो तुम नहीं हो वह बनने के लिये मजबूर होना, या स्वयं को और दूसरों को, जो तुम्हारे नजदीकी हैं, को चोट पहुँचाना ताकि तुम यह पता लगा सको कि तुम क्या हो। मैंने इसके बारे में भी बात की थी कि प्रेम, डर, उत्सुकता, क्रोध, अवसाद, दोष, शक्ति, और घृणा के अनुभव के द्वारा अपने आंतरिक स्वभाव को कैसे जाना जाता है।

"लेकिन एक अतिरिक्त प्रक्रिया है जिसके माध्यम 'आंतरिक जानकारी' होती है जिसका वर्णन मैंने तुमसे नहीं किया है।"

"वह क्या है?"

"पहले मैं तुम्हें इसकी पृष्ठभूमि बताऊंगा कि कैसे 'भावानात्क यादें' संग्रहित होती हैं। जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा है, तुम उन परिस्थितियों को उत्पन्न करते हो जो ऐसी स्थितियां लाती हैं जिनसे तुम्हारी

भावनाएं उत्पन्न होती हैं. एक बार जब भावनाएं उत्पन्न हो जाती हैं, तो तुम उन्हें अपने दिमाग में भावनात्मक यादों की तरह रख लेते हो, उन विचारों के साथ जिन्होंने उन्हें उत्पन्न किया था और वह समय भी जब वह उत्पन्न हुई थी. लेकिन अलग-अलग भावनात्मक यादों की सूची बनाना, या एक समूह में रखना, सबसे पहले और सर्वप्रथम एक दूसरे के साथ सम्बन्ध के अनुरूप होता है. एक गौण सूची उस विचार के अनुसार बनती है जिसने वह विशेष भावना उत्पन्न की थी, और एक तीसरी सूची उस समय के अनुसार बनती है जब वह भावनात्मक घटना घटित हुई थी. इसलिये तुम्हारे पास एक समान भावनाओं का समूह बन जाता है जो 'भावनात्मक संबंध' के अनुसार, या समानता के अनुसार, तुम्हारे 'प्रसाधक के खास खानों' में रखी जाती हैं. एक उदाहरण के रूप में, धोखे से सम्बन्ध रखने वाले सारे भावनात्मक अनुभव एक खाने में रखे जाते हैं. दूसरे खाने में परित्याग के सारे भावनात्मक अनुभव रखे जाते हैं, और एक तीसरे में शोषण के, एक चौथे में, अँधेरे का डर, और ऐसे ही."

"ठीक है, मैं समझ गया."

"एक खाने में से दूसरे खाने में रिसाव भी होता है. एक उदाहरण के रूप में, एक खाने में से धोखे की यादों को स्मरण करने से अलग खाने में रखी उससे सम्बन्धित परित्याग की यादें सक्रिय हो जाती हैं, और ऐसे ही.

"जिस तरीके से भावनाओं की यादों की सूची बनती है उस कारण से, यह बहुत मुश्किल हो जाता है कि अपने खानों में से तुम एक विशेष विचार को ढूँढ पाओ जिसने वह खास भावना उत्पन्न की थी, और वस्तुतः बिल्कुल सही ऐतिहासिक समय-सीमा को जानना असंभव होता है, कि कब एक भावना जो विशेष तरह की घटना से सम्बद्ध है, पहले घटित हुई थी."

रिक्की ने सिर हिलाया, "ठीक है, मैं समझ गया."

"अब, यह स्पष्टीकरण का एक महत्वपूर्ण अंश है जिस पर मैं जानना चाहता हूँ.

"कभी-कभी क्या होता है कि विचार और उससे सम्बन्धित भावनाएं जो तुम्हारे दिमाग में पैदा होती हैं वह तुम्हें सदमा पहुंचती हैं, और तुम उन्हें चरमसीमा तक नापसंद करते हो. तुम्हें यह समझ नहीं आता कि कैसे तुम्हारे जैसा अच्छा व्यक्ति ऐसे घृणित विचार रख सकता है, और ऐसे विचारों के लिये तुम स्वयं से ही घृणा करते हो.

"जब ऐसा होता है, तुम्हारा आवेग उन्हें अपने से दूर रखने का और उनके साथ बर्ताव न करने का होता है. फिर भी, तुम्हें जो जानना चाहिये वह यह है कि इस तरह के अनुभव सामान्य होते हैं. प्रत्येक व्यक्ति उन अनुभवों को कभी-कभी महसूस करता है. तुम्हारा 'बाहरी अहम' और तुम्हारी 'आन्तरिक पहचान' बहुत गहन रूप से रचनात्मक होती हैं, और उनके कारण तुम हर तरह की चीजों के बारे में सोचते हो, जो बोला नहीं जा सकता उसके सहित. तुम्हारे लिये आन्तरिक अनुभव और आन्तरिक जानकारी के लिये हरेक

स्थिति, जिसका तुम सामना करते हो, का मर्दन करना, इधर-उधर करना, और उसका प्रत्येक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना एक सामान्य बात है. इसलिये, उदाहरण के लिये, अगर तुम यौन उत्पीड़न के बारे में अखबार में पढ़ते हो, तो तुम्हारी कल्पना तुम्हें वहाँ ले जायेगी और तुम यह सोचोगे कि घायल पीड़ित व्यक्ति की तरह तुम्हें कैसा लगेगा, जुर्म करने वाले की तरह तुम्हें कैसा लगेगा, एक नजदीकी पारिवारिक सदस्य होने पर तुम्हें कैसा लगेगा, इत्यादि. यदि तुम अपने जागृत जीवन में उस स्थिति के बारे में अपनी भावनाओं को नहीं सुलझा पाते, तो तुम अपने सपनों और दुःस्वप्न में भी उन पर काम करते रहोगे, जब तक कि तुम एक शांतिपूर्ण समझौते तक न पहुँच जाओ.

“लेकिन, कभी-कभी, जब यह विचार और भावनाएं इतनी उग्र होती हैं कि तुम उन पर काबू नहीं पा सकते, तुम उनके बारे में कुछ भी सोचना नहीं चाहते, और तुम उन्हें सुरक्षित अपने एक खाने में पीछे की ओर, जहाँ तुम यह सोचते हो कि यह फिर कभी उजागर नहीं होंगी, ताला लगा कर रख देते हो. समस्या यह है कि, समय के साथ, जिस सामग्री को तुम देखने से इंकार कर देते हो वह तुम्हारे ऊपर हावी होने लगती है, क्योंकि वह विचार और भावनाएं अपने सुने जाने के लिये दुहाई देने लगती हैं. चरमसीमा के मामलों में, वह उस रूप में उभर आती हैं जिसका हम ‘चरमसीमा तक असामान्य व्यवहार के प्रकरण’ की तरह वर्णन कर सकते हैं, और तुम सामान्यतया इन प्रकरणों को बाद में अच्छी तरह से याद रखोगे. और दूसरे अत्यधिक दुर्लभ मामलों में, यह नकारे गये विचार और भावनाएं स्वयं को बहु-व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ इन अनसुलझे भावनात्मक मुद्दों में से पृथक व्यक्तित्व बन जाता है.”<sup>55</sup>

“वह तकलीफ़देह होगा.”

“हाँ, यह तकलीफ़देह होगा. लेकिन भाग्य से वह कभीकभार ही होता है. जो तुम्हें जानना चाहिये वह यह है कि इन अनचाहे विचारों और भावनाओं को सुलझाना अपनी आंतरिक प्रकृति को जानने के लिये एक मुख्य मार्ग होना चाहिये. वह, सामाजिक रूप से स्वीकृत विचार और भावनाएं जिन्हें तुम स्वीकार करते हो के साथ, यह परिभाषित करते हैं कि तुम क्या हो, चाहे तुम इसे पसंद करो या न करो. वह तुम्हारा एक अत्यावश्यक हिस्सा हैं, और इसीलिये वस्तुतः एक जीवनकाल में उनकी उपेक्षा करना असंभव है. जब वह आवाज पाने के लिये और समझे जाने के लिये शोर मचाते हैं, तो वह तुम्हें रोजमर्रा की हानिरहित घटनाओं के लिये सक्रिय कर देते हैं. जब वैसा होता है, तो सारी भावनाएं जो एक खाने में होती हैं एकदम से सतह पर आ जाती हैं, तुम अपने-आप को एक स्थिति में जरूरत से अधिक प्रतिक्रिया करते हुए देखते हो. इसलिये यह महत्वपूर्ण है कि तुम समय लो और अपने खानों में से छांटो - और, समय समय पर उससे निपटो जो तुम्हें परेशान कर रहा है. तुम अपने जीवनकाल में इसे जितना अधिक कर पाओगे, तुम उतने ही संतोषप्रद रहोगे.”

55 इस विषय पर और पढ़ने के लिये, आडम क्रेबट्री देखें. मल्टीपल मैन: एक्सप्लोरेशन इन पोस्सेसन एंड मल्टीपल पर्सनालिटी. टोरंटो:सोमेर्विल्ले हाउस, 1997

“क्या तुम यह कह रहे हो कि हरेक को उपचार करवाना चाहिये.?”

“ज्यादातर व्यक्तियों को अपने जीवनकाल में किसी पेशेवर से बातचीत करने के अवसर से लाभ होगा. लेकिन वह उनकी नियति नहीं हो सकती. उन्होंने ने यह निर्णय लिया होगा कि पूरे जीवनकाल में अपनी अनचाही भावनाओं से संघर्ष करते रहने से एक अधिक दिलचस्प, हालांकि अधिक मुश्किल, शैक्षणिक अनुभव मिलेगा, जिसके माध्यम से वह कष्ट के फलस्वरूप अंततः अर्थ पा ही लेंगे, या तो मृत्यु शैथिल्य पर या मृत्यु के बाद. बेशक, इसलिये भी तुम किसी को उपचार करवाने के लिये मजबूर नहीं कर सकते. उन्हें उसके लिये तैयार करना पड़ेगा, और उन्हें इसे चाहना होगा. और यह कुछ ऐसा भी होगा जिसे उन्होंने अपने लिये नियत किया होगा.”

“मैं समझता हूँ कि इससे यह कहावत बनती है: तुम घोड़े को पानी तक ले जा सकते हो, लेकिन तुम उसे जबरदस्ती पानी नहीं पिला सकते.”

“हाँ, तुम्हारे में बदलने की इच्छा होनी चाहिये इससे पहले कि कोई बदलाव संभव हो.”

“मैं यह जानने के लिये उत्सुक हूँ....मेरे प्रसाधन के खाने में किस तरह के अनसुलझे मुद्दे हैं?”

“एक मुद्दा, जो अब सुलझ गया है, तब हुआ था जब तुम्हें यह पता चला कि तुम समलैंगिक थे. बेशक, जैसा कि मैंने पहले कहा था, समलैंगिक होना तुम्हारा चुनाव था, लेकिन तुम्हारे आंतरिक ज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा यह था कि तुमने इस चुनौती का सामना कैसे किया. तुम अपने देश में प्रचलित पूर्वाग्रह के सन्दर्भ में, जो वहां है, अपनी आंतरिक प्रकृति से कैसे समझौता करोगे? पहले तो तुम इस तरीके से भिन्न नहीं होना चाहते थे, और तुम्हें इससे समझौता करने में कुछ वर्ष लग गये. भाग्य से तुम्हें कभी भी अपनी भावनाओं से आत्म-घृणा या गुस्से का अनुभव नहीं हुआ. तुम्हारे पास स्वतन्त्र इच्छा थी, और तुमने एक ही लिंग के प्रति आकर्षण को अपने स्वभाव के पहलु के रूप में स्वीकार किया, लेकिन इस चेतावनी के साथ कि तुम किसी से नहीं कहोगे और अपनी रोमानी भावनाओं के लिये सख्त हो गये जब तक कि तुम्हें यह नहीं लगा कि इसके बारे में बताना सुरक्षित था. यहाँ पर जो महत्वपूर्ण बिंदु मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि हमेशा ही एक विकल्प होता है. तुम इस स्थिति को अपने लिये एक चुनौती की भान्ति स्थापित करते हो, और तुमने इस तरह से प्रतिक्रिया की.”

“हाँ.....वह सही है.”

“बेशक, कोई भी दो स्थितियाँ बिलकुल सामान नहीं होती, और दूसरे लोग कई कारकों के आधार पर अलग-अलग चुनाव करते हैं. कुछ के लिये, उन्हें अपनी एक ही लिंग के प्रति भावनाओं की जानकारी से क्रोध और आत्म-आलोचना की भावनाएं उजागर होती हैं - और कुछ दृष्टान्तों में यह आत्म-नाश की ओर ले जाती हैं. यह व्यक्ति उस चुनौती का सामना नहीं कर सकते जो उन्होंने अपने लिये स्थापित की

थी और अपनी नकारात्मक भावनाओं को अपनी ही ओर मोड़ लेते हैं. किशोरावस्था में आत्म-हत्या की कोशिशें और आत्महत्याएं, दुर्भाग्य से, इन परिस्थितियों में आम होती हैं।”

“मैं भाग्यशाली हूँ. मैंने कभी भी आत्महत्या की भावना महसूस नहीं की।”

“नहीं, इस मुद्दे के लिये जो परिस्थितियाँ तुमने अपने-आप के लिये नियत की थी वह उनसे कम भयानक थी जिन्हें कई लोगों ने अपने लिये नियत की हुई थी. उदाहरण के लिये तुम्हारे अन्तरंग मित्र थे, तुम अपने हकलाने और पढाई में समस्याओं के कारण अलग तरीके से बड़े हुए थे, तुम स्त्रियोचित नहीं थे, तुम अपने मित्र-समूह द्वारा अकेले नहीं किये गये थे, और तुम एक सताने वाले धार्मिक घर में बड़े नहीं हुए थे या ऐसे माता-पिता के साथ जो तुम्हें नहीं लगता था कि यदि उन्हें पता चल गया तो वह तुम्हें त्याग देंगे.

“जबकि कुछ अपने क्रोध की भावना को अपने अंदर रख लेते हैं, दूसरे इसे बाहर निकाल देते हैं, समलैंगिकों के प्रति घृणा के रूप में जैसी कि मैंने पहले चर्चा की थी. इनमें से कुछ व्यक्ति अपने समलैंगिक आकर्षणों के लिये चेतन रूप से जागरूक होते हैं, जबकि दूसरे नहीं होते. अपनी निराशा में, वह दूसरों को उस चीज के लिये कष्ट देते हैं जिसे वह अपने अंदर स्वीकार नहीं कर सकते. यह बड़े उदासीन हालात हैं, क्योंकि वह अपनी चुनौती का सामना नहीं कर सके. इनमें से कुछ व्यक्ति समलैंगिकों को मारने वाले होते हैं. वह अपनी प्रकृति के किसी भी उस पहलु से घृणा करते हैं, जिसे वह प्रकट करते हैं और दूसरों के साथ पहचान बनाते हैं.”

“हाँ, मैं ऐसे किसी को जानता हूँ जिसने मुझसे यह स्वीकार किया था कि अपने समलैंगिक होने को स्वीकार करने से पहले वह ‘समलैंगिकों को मारने वाला’ था. जो कुछ उसने किया था उसके लिये वह बहुत बुरा महसूस कर रहा था.”

“हाँ...जैसा कि मैंने पहले बताया था, कभी-कभी एक व्यक्ति को स्वयं को और दूसरों को पीड़ा देनी चाहिए इससे पहले कि उसे आंतरिक ज्ञान हो.”

“ऐसी ही स्थिति दूसरी तरह के डराने-धमकाने से होती है. किशोर सामान्यतया दूसरों के द्वारा इस तरह की पीड़ा पहुंचाए जाने पर अतिसंवेदनशील होते हैं, क्योंकि अपने मित्र-समूह द्वारा स्वीकृति के लिये उन्हें अत्यधिक आवश्यकता होती है और उन्होंने अभी तक सवतंत्रता की भावना का समुचित विकास नहीं किया होता. इन घटनाओं में, डराने-धमकाने वाले, दूसरों में एक ऐसी कमजोरी को देखते हैं जिससे वह स्वयं नहीं निपट सके. उनकी घृणा उनकी अपनी उसी कमी से, जिसे वह अपने शिकार के चरित्र में भी मानते हैं, निपट पाने की अक्षमता से निकलती है.”

“मैं जानता हूँ कि स्कूल में कभी-कभी डराने-धमकाने की घटनाएं हुई थी जब मैं छोटा था. मेरे यह साथ कभी नहीं हुआ, लेकिन एक बार मैंने किसी को डराया था जिसे मैं मुश्किल से ही जानता था. वह

मेरे से एक वर्ष बड़ा बच्चा था जो हमारी गली के दूसरे कोने पर रहता था. मैं और मेरे मित्रों ने, कुछ कारणों से जो मैं याद नहीं कर सकता, निर्णय लिया कि वह धौंस दिखाता था और, प्रतिशोध में, कुछ अवसरों पर उसके घर गये और बाहर से चिल्लाये, 'कार्ल धौंस दिखाने वाला है, कार्ल धौंस दिखाने वाला है.' बहुत वर्षों के उपरांत, वह मुझसे अचानक मिल गया, और उसने बताया कि हमने उसे उसकी किशोरावस्था में कितना दुखी और अकेला महसूस कराया था. मैं अभी भी उस बारे में बहुत बुरा महसूस करता हूँ जो हमने उसके साथ किया था."

"यह अच्छा है कि तुम पश्चाताप महसूस करते हो. तुम्हे उस समय अपने चरित्र के पहलुओं को स्वीकार करने में मुश्किलें आ रही थी, और तुमने उन्हें उसके प्रकट कर दिया. जैसा कि मैंने कहा है, कभी तुम्हे वह बनना पड़ता है जो तुम नहीं हो, यह जानने के लिये कि तुम क्या हो. जब तुम इस स्थिति को बाद में सोचो, तो तुम यह भी देख सकते हो कि आंतरिक ज्ञान कैसे होता है, क्योंकि तुम्हारी आत्मा विदीर्ण हो जाती है ताकि यह स्वयं ही अपने मूलतत्त्व से उपचार कर सके, प्रेम की शक्ति. यह अब हो चूका है, और यह इस प्रेम के माध्यम से ही है कि तुम्हे अब पश्चाताप हो रहा है."<sup>56</sup>

"भावना के कोमल रूप जो इस तरह के अनसुलझे मुद्दों से उत्पन्न होते हैं रोजमर्रा के जीवन में बहुधा बनते रहते हैं, और तुम उन्हें बड़ी आसानी से पहचान सकते हो. वह हमेशा ही किसी चीज के लिये, जो हाल ही में हुई है, मन की प्रतिक्रिया से सम्बन्धित होती है, और तुम अपनी प्रतिक्रिया से खुद को ही हैरान करते हो, जो बस थोड़ी अत्यधिक होती है. यह कुछ भी हो सकता है - कुछ ऐसा भी जो सतही तौर पर महत्वहीन है, जैसे कि किसी की पोशाक या बोलने का तरीका. लेकिन यह सम्बन्धित अनसुलझी यादों को भी सक्रिय कर देता है जो तुम्हारे खाने में भरी गई हैं और वह सभी सतह पर एकदम से तैर कर आ जाती हैं, जिससे तुम्हारी प्रतिक्रिया होती है."

"हाँ, कभी-कभी मेरी भी ऐसी ही प्रतिक्रिया होती है. यह जटिल है. मैं सामान्यतया समझ नहीं पाता कि वह मुझमें क्यों हैं."

"हाँ, मैं जानता हूँ. तुम्हे एक भावना का अनुभव होता है, लेकिन उस भावना से सम्बन्धित यादें और विचार, जो तुम्हे यह समझने में सहायक हो सकते हैं कि तुम्हे इनका अनुभव क्यों हो रहा है, वास्तव में उपलब्ध नहीं हैं. और समय-सीमा का जानना, जहाँ से उनका उद्भव हुआ होगा, इससे भी अधिक मुश्किल है. यदि तुम्हे इस तरह की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से कष्ट होता है, तो चिकित्सक के दफ्तर में कुछ बार जाना तुम्हे इस तरह का अवसर देगा कि तुम अपने प्रसाधक में देख सको और वह खाना खोल सको जिसमें सम्बन्धित अनसुलझी भावनात्मक यादें रखी हुई हैं."

---

56 इस विषय पर और सूचना के लिये परिशिष्ट 'क' में ओरेओन का लेक्चर "डराना-धमकाना, डराए-धमकाए गये, और क्षमा करना" देखें

“परन्तु, इस तरह की अंतर्द्वियों की प्रतिक्रिया को किसी चीज के बारे में एक मजबूत और मान्य राय के साथ मत मिलाओ. वह सामान्य है और तुम क्या हो उसका एक अंश; तुम्हारी विशिष्टता, तुम्हारे मस्से और सब कुछ, जिसके बारे में तुम्हें क्षमाशील नहीं होना चाहिये. फिर भी अपनी ही राय और व्यवहार पर प्रश्न उठाना गुणकारी है जब वह उस उच्च आदर्श के अनुरूप न हो जिसे तुम अपनाना चाहोगे. दूसरी चरमसीमा पर, फिर भी, बहुत अधिक नाभि की ओर या अपना ही प्रतिबिम्ब देखना अस्वास्थ्यकर है. यह तुम्हें विकसित बना देता, क्योंकि तुम हरेक चीज जो करते हो उस पर सवाल उठाते हो, और अपने शरीर से दूर बाहर के संसार में दोनों आँखों से देखना बंद कर देते हो.”

अपनी नाभि से ध्यान हटाओ और  
अपने आसपास के संसार पर केन्द्रित करो.

“ ‘दोनों आँखों से’ तुम्हारा क्या मतलब है?”

“जब एक आँख तुम्हारी नाभि को देख रही है, तुम्हारी हरेक प्रतिक्रिया का विश्लेषण करते हुए, और दूसरी तुम्हारे आसपास की दुनिया को देख रही है, तुम्हारा ध्यान बंट जाता है और फिर तुम प्रश्न करते हो कि तुम क्या कर रहे हो. अगर यह जारी रहता है, तो दोनों ही आँखों का ध्यान तुम्हारी नाभि की ओर खिंच सकता है और तुम्हारा बाहर की दुनिया से सम्बन्ध बाधित हो सकता है, जिस समय तुमने अपने सबसे अधिक बुनियादी अस्तित्व का उल्लंघन किया है, जो बिना क्षमाशील हुए जो तुम हो वही होना है और अपने-आप को दुनिया में धकेलना है.”

“मैं समझ गया. यह सब एक साथ जुड़ता है. तुमने मुझे नाभि की ओर देखने के नुकसान के बारे में चेतावनी दी थी जब तुमने मुझसे सर्वोत्कृष्टता के बारे में पहले बात की थी.”

“हाँ. अपने आसपास की बाहर की दुनिया में देखना भूल जाना बहुत आसान है, जब तुम जीवन की बारीकियों में उलझ जाते हो.”

अब तक, रिक्की को बहुत सारी जानकारी, और उसे इसे जज्ब करने की जरूरत थी. वृद्ध आत्मा को इसकी जानकारी थी, और, मुलाकात को खत्म करने की तैयारी में, उसने कहा, “अच्छा, अब के लिये मेरे पास तुम्हारे लिये यही सब कुछ है. हमने आज बहुत सारी जानकारी को पूरा कर लिया है. क्या तुम मुझसे कुछ प्रश्न पूछना चाहोगे?”

रिक्की ने, उस सब के बारे में सोचते हुए जो वृद्ध आत्मा ने उसे कहा था, टिप्पणी की, “ऐसा लगता है कि तुम्हारे पास हरेक चीज के लिये, जो दुनिया में हो रही है, भव्य दृष्टि है. वह कैसे होता है?”

